26 अगस्त 2022, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 41, अंक 2, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454-5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर,
नई आबादी – छिन्दवाड़ा

वीतराग-विज्ञान (469)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

व्हाट्सऐप नं. : 7412078704

E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	**:**	**10000**

धर्म : प्रदर्शन या आत्मदर्शन

धर्म प्रदर्शन की वस्तु नहीं, धर्म तो आत्मदर्शन का नाम है; जिसका विस्तृत विवेचन जैन दर्शन में है। केवल जैनकुल में जन्म ले लेने से या धर्मायतनों के निर्माण में धन दे देने से भी धर्म उपलब्ध होने वाला नहीं है। उसके लिए स्वयं को जैनदर्शन का अध्ययन/स्वाध्याय तो करना ही होगा, तभी इस लोक में और परलोक में भी सुख मिल सकेगा।

लोकोपकारी कार्यों को देखकर लोक भले ही इसकी देह को ससम्मान चंदन की चिता से जलायें, बड़े-बड़े नेता इसकी श्रद्धांजलि सभायें करें और उनमें इसके इन कार्यों का गुणगान करें; पर इन सबसे इसके आत्मा को क्या लाभ होगा? कुछ भी नहीं। जो धर्म शास्त्रों के स्वाध्याय को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेते हैं, वे तत्त्वज्ञान के बल से धीरे-धीरे अपनी इच्छाओं को जीत लेते हैं; और विषयों की नि:सारता को भली-भाँति समझ लेते हैं। इसकारण उनको विषयों की इच्छा व्यर्थ लगने लगती है। वे अपने पुण्योदय से प्राप्त न्यायोपात्त सामग्री में ही संतुष्ट रहते हैं। ऐसे जीव ही सचमुच धर्मात्मा हैं।

– इन भावों का फल क्या होगा, पृ. 71

वीतराग-विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का, घर–घर होय प्रसार।।

वर्ष : 41 (वीर निर्वाण संवत् 2548) 469/अंक : 02

तजि विषयन की यारी

मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।।टेक।।
श्री भगवान चरण पिंजरे बसि तजि विषयन की यारी।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 1 ।।

कुमति कागली सौं मति राचौ ना वह जात तिहारी।
कीजे प्रीत सुमति हंसी सौं बुध हंसन की प्यारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 2 ।।

काहै को सेवत भव झीलर दुख जल पूरित खारी।
निज बल पंख पसारि उड़ो किन हो सरवरचारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 3 ।।

गुरु के वचन विमल मोती चुग क्यों निज बान बिसारी।
है है सुखी सीख सुधि राखै भूधर भूले ख्वारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 4 ।।

– कविवर पण्डित भूधरदासजी

मंगल आमंत्रण

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 2 अक्टूबर 2022 से रविवार दिनांक 9 अक्टूबर 2022 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

हर्ष का विषय है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की शृंखला में 25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 02 अक्टूबर, 2022 से रविवार, दिनांक 09 अक्टूबर, 2022 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

उक्त शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जायेगा। अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक विशेष अवसर होगा।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका	डॉ. हुकमचंद भारिल्ल
अध्यक्ष	महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 8949033694

सम्पादकीय

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे....)

भरत का अन्तर्द्वन्द्व : नाटक

तीसरा अंक

ग्यारहवाँ दृश्य

(भरत भगवान की दिव्यध्वनि खिर रही है और सारी जनता सुन रही है। गाँव-गाँव में शास्त्र सभायें चल रही हैं और उनमें उसी की चर्चा हो रही है। अयोध्या में जिनमन्दिर में भी शास्त्र सभा चल रही है और उसमें एक विद्वान सबको समझा रहे हैं।)

एक विद्वान – भगवान भरतजी ने सारे जग को आत्मा के अनुभव की बात बताई है, अकर्त्तापन की अद्भुत बात बताई है।

जगत में अनन्त द्रव्य हैं और वे सब स्वयं के स्वयं कर्त्ता-भोक्ता है। कोई किसी का कुछ नहीं करता। किसी को कुछ लेता-देता नहीं है। लेने-देने की बात तो गुलामी है, गुलामी की बात है। सभी स्वयं के स्वामी हैं, कोई किसी का नहीं है।

यह बात ही एकमात्र भूतार्थ, सत्यार्थ है, शेष सब बातें मात्र व्यवहार हैं, व्यवहार कथन हैं।

हे भव्यात्मा! एक अपने आत्मा को जानो, उसी में अपनापन करो। उसी का ज्ञान-ध्यान करो, उसी में रत रहो।

यह ज्ञानानन्द स्वभावी आत्मा अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड है, असंख्यप्रदेशी है।

यद्यपि अभी यह देह में रहता है, पर देह से भिन्न है, अरस है, अरूप

है, अगंध है; इसका परपदार्थों से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।

यद्यपि आत्मा में राग है, पर वह रागरूप नहीं है। यद्यपि उसमें गुण हैं, प्रदेश हैं; पर वह गुणभेदरूप नहीं है, प्रदेशभेद रूप नहीं है।

एक श्रोता – भरतजी ने तो हमें पहले यह समझाया था कि हमें रात्रि भोजन नहीं करना चाहिये, जल का उपयोग भी अच्छी तरह छानकर करना चाहिये। और भी बहुत बातें बताई थीं।

विद्वान पण्डितजी – वे बातें भी सब ठीक हैं, प्रत्येक गृहस्थ को शुद्ध, सात्विक और सदाचारी तो होना ही चाहिये।

पर वे सब बातें व्यवहार की हैं, व्यवहार नय से कही गई बातें हैं और यह निश्चयनय की बात बताई जा रही है।

परमशुद्धनिश्चयनय का विषय रूप जो आत्मा है; वह श्रद्धा का श्रद्धेय है, ध्यान का ध्येय है, परम पारिणामिकभाव रूप ज्ञायकभाव है; उसमें अपनापन सम्यग्दर्शन है, उसी को निजरूप जानना सम्यग्ज्ञान है, उसी में जम जाना, रम जाना, समा जाना ध्यान है, चारित्र है।

हे भव्यजीवो! ध्यान से सुनो! सहज जीवन ही समता है। अरे हमें तो और कुछ भी नहीं करना है; बस सहजभाव से जानते-देखते रहना है। यदि हम इसीप्रकार से सहजभाव से जानते-देखते रहे तो नग्न दिगम्बर दशा में अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है। मुनिराज भरत को हो गया है न!

इस बात को ध्यान से समझलो कि अकर्त्ताभाव बिना शुद्धोपयोग नहीं होता, शुद्धोपयोग के बिना कर्म का नाश नहीं होता। यदि घातिया कर्म नष्ट न हों तो केवलज्ञान नहीं होता और केवलज्ञानी हुये बिना कोई अरहंत नहीं होता।

भरतजी अरहंत हो गये हैं, वे वीतरागी-सर्वज्ञ हो गये हैं और आत्महित का उपदेश देने वाले भरत, भगवान हो गये हैं।

कुछ काल में सिद्ध भी हो जावेंगे। हम उनको वंदन करते हैं, उनका अभिनन्दन करते हैं।

भरतजी के जीवन की यह कथा हम सभी को प्रेरित करती है कि **आत्मा को कभी मत भूलो।**

भरतचक्रवर्ती का यह पावन चरित्र जो भी पढ़ेगा-सुनेगा, उसे परम शान्ति की प्राप्ति होगी, किसी भी प्रकार की दुविधा नहीं रहेगी। चित्त की शान्ति ही जीवन का सार है, इसे प्राप्त करके सभी जीव इस संसार समुद्र से पार हो सकते हैं।

(नेपथ्य में मंदस्वर में निम्नांकित गीत चल रहा था।)

(रेखता)

अरे भगवान भरत ने कही एक आतम अनुभव की बात।
बताई सारी दुनियाँ को अकर्त्तापन की अद्भुत बात।।
अनन्ते द्रव्य जगत में हैं किसी का कोई कुछ ना करे।
सभी अपने-अपने कर्त्ता सभी अपने को ही भोगें।।1।।

सभी हैं न्यारे-न्यारे द्रव्य किसी का ना है कोई भाई।
सभी हैं अपने में परिपूर्ण किसी में नहीं कमी कोई।।
अरे रे परद्रव्यों से लेन-देन की बात गुलामी है।
अरे रे सभी द्रव्य स्वाधीन स्वयं के ही सब स्वामी हैं।।2।।

अरे है यह निश्चय की बात न इसमें कुछ भी संशय है।
यही है परम सत्य परमार्थ भरतजी ने बतलायी है।।

अरे रे यही एक भूतार्थ और सब अभूतार्थ जानो।
कथन जो कुछ भी आता हो सभी व्यवहार कथन मानो।।3।।

आत्मा को जानो हे भव्य उसी में अपनापन तुम करो।
उसी का ज्ञान उसी का ध्यान नित्य उसमें ही तुम रत रहो।।
अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड ज्ञान आनन्द स्वभावी है।
उसमें हैं असंख्यपरदेश किन्तु वह तो अखण्ड ही है।।4।।

देह में रहे देह से भिन्न अरे यह अरस अरूप अगन्ध।
अरे भगवान आतमा का नहीं पर से कुछ भी सम्बन्ध।।
यद्यपि इसमें उपजे राग किन्तु यह रागरूप है नहीं।
अरे यह ज्ञानानन्द स्वभाव किन्तु गुणभेद रूप है नहीं।।5।।

(विष्णु)

परमशुद्धनिश्चयनय का जो विषय आतमा है।
श्रद्धा का श्रद्धेय ध्यान का ध्येय आतमा है।।
पर्यायों से पार ज्ञान-आनन्द स्वभावी है।
परम पारणमिकभाव स्वयं चैतन्य स्वभावी है।।6।।

उसमें ही अपनापन निश्चय सम्यग्दर्शन है।
निजरूप जानना ज्ञान आतमा का अभिनन्दन है।।
अरे उसी में जमना-रमना और समा जाना।
लीन और तल्लीन यही है ध्यान आतमा का।।7।।

अपनेपन के साथ निरन्तर सहज स्वयं को ही।
सहजभाव से बिन तनाव के नित्य निरन्तर ही।।
निर्विकल्प हो सहज जानते रहना अनुभव है।
यही ज्ञान है यही ध्यान है यही समाधी है।।8।।

हे भव्य! ध्यान से सुनो सहज जीवन ही समता है।
करने–धरने के विकल्प ही बड़ी विषमता है।।
जो कुछ होता शान्तभाव से हमें जानना है।
जानन–देखन हारा हूँ – बस यही मानना है।।9।।

कुछ भी करना नहीं बोलना और सोचना नहीं।
निर्विकल्प हो शान्तभाव से सहज जानना सही।।
अगर दो घड़ी शान्तभाव से ऐसे ही रह सकें।
होगा केवलज्ञान सुनिश्चित सहज जानते रहें।।10।।

बस सहज जानते रहना है कुछ और नहीं करना।
अपने में ही जमना रमना कुछ और नहीं करना।।
कुछ विकल्प ना करना है बस निर्विकल्प रहना।
इतना ही मुक्तिमारग है अर मुक्ति भी इतनी।।11।।

भरत जिनेश्वर ने जग को मुक्तिमग बतलाया।
बस लगातार अन्तर्मुहूर्त्त तक अन्तर में रहना।।
यदि लगातार अन्तर्मुहूर्त्त तक अन्तर में न रहे।
तो केवलज्ञान नहीं होगा चाहे जो कुछ कर लो।।12।।

और अकर्त्ताभाव बिना आतम अनुभव करना।
सम्भव होता नहीं भरत जिनवरका यह कहना।।
जो कुछ होना सब नक्की वह बदल नहीं सकता।
ऐसा माने बिना अकर्त्ताभाव नहीं होता।।13।।

और अकर्त्ताभाव बिना शुद्धोपयोग न हो।
शुद्धोपयोग के बिना कर्म का नाश नहीं होता।।

अगर घातिया नष्ट ना हों तो केवलज्ञान न हो।
और केवली हुये बिना अरहन्त नहीं होते।।14।।

तथा केवली होने से अरहन्त हो गये हैं।
परम वीतरागी जिनेन्द्र सर्वज्ञ हो गये हैं।।
हित-उपदेशक भरतराज भगवन्त हो गये हैं।
अनन्त चतुष्टय के धारक जयवन्त हो गये हैं।।15।।

(रेखता)

परमसुख भोगें नन्तानन्त अनन्तानन्त काल तक वे।
अरे अपने में ही थिर रहें अनन्तानन्त काल तक वे।।
अनन्त दर्शन अनन्त वीरज अनन्तानन्त ज्ञानमय वे।
भरत भगवन्त हो गये सिद्ध स्वयं में ही हैं सबकुछ वे।।16।।

पाँच सौ पैसठ छन्दों का ग्रन्थ यह इसमें अन्तर्द्वन्द्व।
भरत के अन्तर का यह द्वन्द्व ज्ञानियों का है अन्तर्द्वन्द्व।।
भरत के जीवन की यह कथा सभी को प्रेरित करती है।
आतमा को भूलो मत कभी - बात यह सबसे कहती है।।17।।

(दोहा)

उनका पावन चरित यह, पढे-सुने जो कोय।
परम शान्ति को प्राप्त हो, दुविधा रहे न कोय।।18।।
अरे चित्त की शान्ति ही, है जीवन का सार।
इसे प्राप्त कर जीव सब, होते भव से पार।।19।।[1]

पटाक्षेप

---

1. भरत का अन्तर्द्वन्द्व : अध्याय 10 - छन्द 26...30, 31...33, 36...44, 47, 48, 50, 51

।।भरत का अन्तर्द्वन्द्व नाटक समाप्त।।

छहढाला प्रवचन

सिद्धि प्राप्ति का उपाय

जहाँ ध्यान-ध्याता-ध्येय को न विकल्प वच भेद न जहाँ।
चिद्भाव-कर्म, चिदेश-कर्त्ता, चेतना-किरिया तहाँ।।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध-उपयोग की निश्चल दशा।
प्रकटी जहाँ दृग-ज्ञान-व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जिन्हें केवलज्ञान होने की तैयारी है -ऐसे मुनियों की दशा कैसी अद्भुत और अलौकिक होती है। जहाँ ध्यान-ध्याता ध्येय एकाकार है, उसमें कोई भेद नहीं है, विकल्प नहीं, वचन विकल्प नहीं है, वह अनुभूति वचनातीत है, विकल्पातीत है। वहाँ आत्मा का चैतन्यभाव स्वयं कर्म है, चैतन्य परमेश्वर आत्मा स्वयं कर्त्ता है और आत्मा की चेतना ही क्रिया है। इसप्रकार मुनिराज की स्वानुभूति में कर्त्ता-कर्म-क्रिया तीनों अभेद हैं, उनमें भिन्नता नहीं है, तीनों ही चैतन्यरूप हैं। शुद्धोपयोग की इस निश्चलदशा में तीनों अभिन्न (भेद रहित) और अखिन्न (खेद रहित) हैं। उपयोग स्वरूप में एकाग्र हुआ, अब वह चलित नहीं होता, निश्चल रहता है, उसमें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों एकरूप शोभित होते हैं। दर्शन-ज्ञान-चारित्र के भेद में शोभा नहीं है, उनकी एकता में, अभेद अनुभूति में ही शोभा है। ऐसी अनुभूति में लीन होकर मुनिराज केवलज्ञान की साधना कर रहे हैं, मानो उसे बुला रहे हों; यही उनका स्वरूपाचरण है।

वीतरागी मुनिराज स्वरूपाचरण द्वारा जब आत्मध्यान में लीन होते हैं; तब ध्यान-ध्याता-ध्येय का भेद नहीं रहता। वहाँ कर्त्ता, कर्म और क्रिया तीनों अभिन्नरूप से आत्मा ही हैं। शुद्धोपयोग की निश्चल दशा में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों एकरूप शोभित होते हैं। उस समय के आनन्द की क्या बात कहना। मुनिराज उग्र पुरुषार्थ द्वारा केवलज्ञान का दरवाजा खोल रहे हैं। बस अभी केवलज्ञान प्रकट हो जायेगा।

स्वरूपाचरणचारित्र में मात्र स्वानुभूति का रस बरसता है। सम्यग्दृष्टि को भी स्वानुभूति के काल में अनन्त गुणों का सागर आत्मा अपने आनन्द आदि गुणों की चमत्कारिक स्वाभाविक पर्यायों में रमण करता हुआ प्रकट होता है। यह निर्विकल्प दशा अद्भुत है, वचनातीत है। यह दशा प्रकट होने पर सारा जीवन ही पलट जाता है। सम्यग्दृष्टि की स्वानुभूति की ऐसी महिमा है। तो मुनिराज की स्वानुभूति की क्या बात?

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के समय अव्रती गृहस्थ को भी ध्याता-ध्यान-ध्येय या ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय के विकल्पों से रहित एक अखण्ड चैतन्यमात्र वस्तु का ऐसा ही अनुभव होता है। तत्त्ववेदी जीव को बद्ध-अबद्ध आदि विकल्पों से पार शुद्ध चैतन्य का अनुभव होता है, यही समयसार है। सम्यग्दर्शन भी यही है, सम्यग्ज्ञान भी है, आनन्द भी यही है। विशेष क्या कहें? आत्मा का सर्वस्व उसमें समा जाता है।

समयसार गाथा १४४ में यह बात बहुत अच्छी तरह समझाई है। वह गाथा सम्यग्दर्शन उत्पन्न करने की विधि बताती है। अपने ज्ञानस्वभाव का निश्चय करके ज्ञान को अन्तर्मुख करते ही भगवान आत्मा आनन्द सहित प्रकट अनुभव में आता है; उसमें सम्यग्दर्शन आदि अनन्तभाव समा जाते हैं। यही समय का सार है, यह नयपक्ष से पार है। ऐसी दशा चतुर्थ गुणस्थान में होती है और मोक्ष का मार्ग खुल जाता है। आठ वर्ष का बालक या

बालिका हो, सिंह, हाथी जैसे पशु हों, अरे! नरक का नारकी हो – ये सभी अपने उपयोग को अन्तर्मुख करके ऐसी अपूर्व अनुभवदशा प्रकट कर सकते हैं। अन्तर में चैतन्य भगवान बैठा है न! वह जाग जाए तो सम्यग्दर्शन होने में क्या देर है? उसमें तो ऐसी ताकत है कि अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्रकट कर ले। बापू! तू जाग और अपनी शक्ति को सम्हाल! ऐसे उत्तम अवसर को मत चूक!

देखो यह भगवान का संदेश! देवों, मनुष्यों और तिर्यञ्चों की सभा में तीर्थंकर भगवान यह संदेश सुनाते थे 'भगवान! तू हमारे जैसा आत्मा है, चैतन्यस्वरूप है, शुद्ध है, आनन्द से परिपूर्ण है; तू सभी बातों में परिपूर्ण है, किसी भी बात में अधूरा नहीं है, तू क्रोधादिभावरूप नहीं है, चैतन्यभावरूप है।' भगवान की वाणी में अपने आत्मा का स्वरूप सुनते ही बहुत से जीव उपयोग को अन्तर्मुख करके ध्यान-ध्याता-ध्येय के विकल्पों से पार निर्विकल्प चैतन्यतत्त्व का अनुभव करके अतीन्द्रिय आनन्द प्रकट कर लेते हैं। शुद्धोपयोग के बिना चैतन्य में परिणाम एकाकार नहीं होते, एकाग्रता बिना निर्विकल्पता नहीं होती और निर्विकल्पता के बिना आनन्द की अनुभूति नहीं होती। ऐसी दशा धन्य है। कुन्दकुन्दाचार्य ने चतुर्थ गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि को भी धन्य कहा है। मोक्षपाहुड़ गाथा ८६ में वे लिखते हैं – सिद्धि कर ऐसे सम्यक्त्व को जिन्होंने स्वप्न में भी मलिन नहीं किया, वे श्रावक धन्य हैं, शूरवीर हैं, पण्डित हैं। जब चौथे गुणस्थानवाले सम्यग्दृष्टि को भी धन्य कहा है तो सातवें गुणस्थानवर्ती मुनियों की महिमा की क्या बात? वह दशा तो धन्य-धन्य है। यह तो परमेष्ठी पद है। वे शुद्धोपयोग द्वारा बारम्बार ध्यान में एकाग्र होते हैं, मानो सिद्ध होकर बैठ गए हों।

समयसार की सातवीं गाथा में भी कहा है कि धर्मी को अनुभूति में ज्ञान-दर्शन-चारित्र के भेद नहीं होते। यद्यपि व्यवहार में अनन्त गुण-पर्यायों के भेद हैं; तथापि अभेद आत्मा की अनुभूति उन सबको पी जाती

है। अनुभूति में वे सभी गुण-पर्याय समा जाते हैं अर्थात् अभेद में भेद दिखाई नहीं देते। अभेद एक तत्त्व की अनुभूति में भेद का कोई विकल्प नहीं रहता। ऐसी अनुभूतिपूर्वक सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन प्रकट होता है। फिर निर्विकल्प स्वानुभूति दशा कायम नहीं रहती, कभी-कभी होती है। मुनि को तो बारम्बार घड़ी-घड़ी निर्विकल्प स्वानुभूति होती रहती है। फिर वे श्रेणी चढ़कर केवलज्ञान प्रकट कर लेते हैं। मुनिराज का ऐसा स्वरूप विचारते समय ऐसा लगता है, मानो वे साक्षात् हमारे सामने आकर खड़े हो गए हों।

विकल्प, ज्ञानी का कार्य नहीं है, ज्ञानी का कार्य ज्ञानभाव ही है। ध्यान के समय आत्मा स्वयं ही कर्त्ता-कर्म-क्रियारूप परिणमित होता है; परन्तु वहाँ कर्त्ता-कर्म-क्रिया का भेद नहीं रहता; सब कुछ एकाकार चैतन्यरूप अनुभव में आता है। बाद में विकल्प होते हैं, राग होता है; परन्तु धर्मी उसे अपने ज्ञान का कार्य नहीं मानते, उसे राग के साथ कर्त्ता-कर्मपना नहीं है। मैं ज्ञानस्वरूप आत्मा कर्त्ता और ज्ञानभाव मेरा कर्म - ऐसा भेद भी अनुभूति में नहीं रहता, उसमें तो चैतन्य में निश्चल शुद्धोपयोग ही वर्तता है, एकाकार ज्ञायकभाव ही अनुभव में आता है; रत्नत्रय की एकता में आत्मा शोभित होता है, प्रकाशित होता है।

यहाँ मोक्षमार्गी मुनिराज के स्वरूपाचरण की बात चल रही है। चौथे गुणस्थान में निर्विकल्प अनुभव द्वारा अनन्तानुबन्धी कषाय का अभाव होने पर स्वरूपाचरण का प्रारम्भ होता है; उसके बाद आत्मा चैतन्यस्वरूप में एकाग्र होने पर जैसे-जैसे विज्ञानघन होता जाता है, वैसे-वैसे कषायें टूटती जाती है और स्वरूपाचरणरूप शुद्ध परिणति बढ़ती जाती है। रागभाव स्वरूपाचरण नहीं है, वह तो परभावरूप आचरण है। ध्यान-ध्याता-ध्येय के भेद रहित अभेद अनुभूति मुनियों का स्वरूपाचरण है, उसमें उपयोग चैतन्य के स्वाद में ही निश्चल एकाग्र रहता है। ऐसा शुद्धोपयोग ही मोक्ष का उपाय है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

एकत्व ही सौन्दर्य है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा 101 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

एगो य मरदि जीवो एगो य जीवदि सयं।
एगस्स जादि मरणं एगो सिज्झदि णीरओ।।101।।

(हरिगीत)

अकेला ही मरे एवं जीव जन्मे अकेला।
मरण होता अकेले का मुक्त भी हो अकेला।।101।।

जीव अकेला मरता है और स्वयं अकेला जन्मता है; अकेले का मरण होता है और अकेला रज रहित होता हुआ सिद्ध होता है।

(गतांक से आगे....)

''जीव अकेला ही परमगुरु के प्रसाद से प्राप्त स्वात्माश्रित निश्चयशुक्लध्यान के बल से निजात्मा को ध्याकर रज रहित होकर शीघ्र निर्वाणपद पाता है।''

धर्म प्राप्त करने की जिसकी योग्यता हुई, उसके ऊपर परमगुरुओं की प्रसन्नता हुई। धर्म पानेवाले को ज्ञानी गुरु मिले बिना नहीं रहते। वे गुरु कहते हैं कि भाई! तू अपने चैतन्य को पहिचान, देह तुझे शरण नहीं है – ऐसा गुरु ने कहा, वह भी जीव अकेला ही झेलता है। जिस जीव ने झेला उसे परमगुरु का प्रासाद प्राप्त हुआ कहा जाता है। इसप्रकार परमगुरु के प्रसाद से जीव स्वात्माश्रित निश्चयशुक्लध्यान के बल से निज आत्मा को ध्याकर कर्म का नाश करके अकेला ही मुक्ति पाता है।

मुनि ध्यान में बैठे हों और पूर्वभव का बैरी देव आकर उठा ले जाय और पर्वत पर जाकर पछाड़े अथवा समुद्र में डुबा दे तो भी मुनि तो स्वात्माश्रित निश्चयशुक्लध्यान द्वारा श्रेणी माँड़कर सिद्ध हो जाते हैं, उसमें भी जीव अकेला ही है। मुक्ति प्राप्त करने में भी कोई–भी दूसरा शरणभूत नहीं है। इसीप्रकार कोई मुनि को घानी में पेल दे – ऐसी दशा में भी मुनि आत्मा में लीन होकर अपने आत्मध्यान के बल से केवलज्ञान और मुक्ति पा जाते हैं; उसमें भी जीव अकेला ही है, वहाँ देह के मजबूत संहनन से मुक्ति हुई हो – ऐसा नहीं है। शरीर के बल के कारण मुक्ति नहीं होती, मुक्ति तो आत्मध्यान के बल से ही होती है।

मुनियों को संथारा में दूसरे मुनि सहायता करते हैं – ऐसा निमित्त से कथन होता है; परन्तु वे मुनि स्वयं अपने आत्मबल से समाधि करें तो समाधि होती है, अन्यथा नहीं होती। भले ही अन्य मुनिगण उपस्थित हों; तथापि समाधिमरण करने में तो जीव अकेला ही है।

ऐसा सिद्धान्त समझे तो परसहाय की अपेक्षा न रखते हुए, पर से भिन्न अकेले आत्मा को जानकर, उसमें एकाग्र होने पर प्रत्याख्यान हो और जन्म–मरण का दुःख मिट जाय। आत्मा स्वयं ही जन्म–मरण करता है और स्वयं ही निर्वाण पाता है।

इसीप्रकार अन्यत्र कहा है –

(अनुष्टुभ)

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते।।54।।

(दोहा)

स्वयं करे भोगे स्वयं यह आतम जग माँहि।
स्वयं रुले संसार में स्वयं मुक्त हो जाँहि।।54।।

श्लोकार्थ : आत्मा स्वयं कर्म करता है, स्वयं उसका फल भोगता है, स्वयं संसार में भ्रमता है तथा स्वयं संसार से मुक्त होता है।

जीव का न तो कोई विरोधी है और न कोई सहायक है। कर्म का उदय जीव को रागादि कराता हो – ऐसा भी नहीं है। जीव अकेला ही रागादिक करता है और स्वयं ही उसका फल भी भोगता है। जिसप्रकार संसार में अकेला ही भटकता है, उसीप्रकार आत्मभान करके मुक्त भी अकेला ही होता है। हजारों मनुष्यों के बीच में हो; तथापि जो भाव करता है, वह स्वयं ही करता है और उसका फल भी स्वयं अकेला ही भोगता है। ऐसे स्वभावभान बिना प्रत्याख्यान नहीं होता।

श्री सोमदेवपंडितदेव ने यशस्तिलकंचम्पूकाव्य में दूसरे अधिकार में एकत्वानुप्रेक्षा का वर्णन करते हुए **119** वें श्लोक में कहा है कि –

(वसंततिलका)

एकस्त्वमाविशसि जन्मनि संक्षये च
भोक्तुं स्वयं स्वकृतकर्मफलानुबन्धम्।
अन्यो न जातु सुखदु:खविधौ सहाय:
स्वाजीवनाय मिलितं विटपेटकं ते।।119।।

(वीर)

जनम-मरण के सुख-दुख तुमने स्वयं अकेले भोगे हैं।
मात-पिता सुत-सुता बन्धुजन कोई साथ न देते हैं।।
यह सब टोली धूर्तजनों की अपने-अपने स्वारथ से।
लगी हुई है साथ तुम्हारे पर न कोई तुम्हारे हैं।।119।।

श्लोकार्थ : स्वयं किये हुये कर्म के फलानुबन्ध को स्वयं भोगने के लिये तू अकेला जन्म में तथा मृत्यु में प्रवेश करता है, अन्य कोई (स्त्री-पुत्र-मित्रादिक) सुख-दुःख के प्रकारों में बिल्कुल सहायभूत नहीं होता;

अपनी आजीविका के लिये (मात्र अपने स्वार्थ के लिये स्त्री-पुत्र-मित्रादिक) ठगों की टोली तुझे मिली है।

अहो! यहाँ आत्मा का एकत्वस्वरूप बताते हुए वैराग्य वर्णन करते हैं। स्वयं जैसा शुभाशुभ कर्म किया, उसके फल को भोगने के लिए जीव अकेला ही जन्म और मरण में प्रवेश करता है। चक्रवर्ती जैसों के लिए भी दूसरा कोई सहायरूप नहीं है। लाखों मनुष्य खड़े हों, विशाल महल हो; तथापि मृत्युकाल प्राप्त होने पर कोई बचा नहीं सकता। जीव अकेला ही मृत्यु में प्रवेश करता है और उस समय माता-पिता, स्त्री-पुत्र, धन-मित्रादिक कोई भी उसके दुःख के प्रकारों में रंचमात्र भी सहायक नहीं होते। सैकड़ों हरिणों की टोली में सिंह आकर एक को पकड़े, वहाँ अन्य सभी क्या करें? उसीप्रकार आत्मा को भी जन्म-मरण में कोई माता-पिता, स्त्री-पुत्र आदि बिल्कुल सहायभूत नहीं होते। यह तो सब अपनी-अपनी आजीविका आदि के साधने के लिए तुझे धूर्त्तों की टोली मिली है अर्थात् यदि तू उनके मोह में रुकेगा तो तेरा आत्मा धूर्त्तित हो जायेगा, इसलिए तू अपने एकत्वस्वरूपी आत्मा को जान।

तेरा आत्मा अकेला है, तू उसका ज्ञान कर! इसके बिना प्रत्याख्यान नहीं हो सकता। अपने आत्मा के अतिरिक्त यदि तू अन्यत्र रुक जायेगा तो तेरी स्वरूपलक्ष्मी लुट जायेगी, इसलिए निमित्तरूप में स्त्री-पुत्रादि को धूर्त्तों की टोली कहा है। तेरा आत्मा अनादिकाल से स्वरूप को चूककर संसार में जन्म-मरण कर रहा है, उसमें कोई तुझे शरणभूत नहीं है।

यह चारित्राधिकार है; इसमें जैसा बताया है वैसा चारित्र प्रगट होने के पश्चात् जन्म-मरण होता नहीं है; इसलिए ऐसे एकत्व आत्मा को जान और उसकी भावना कर। सामनेवाला जीव तो अपने स्वार्थप्रमाण अनुकूलता रखता है, तेरे विविध दुःखों में कोई शरणभूत नहीं है।

चैतन्य आत्मा को पुण्य-पाप भी शरणभूत नहीं हैं, बाह्य में स्त्री-धनादि भी शरण नहीं हैं, इसलिये चैतन्यस्वरूप आत्मा को जानकर पर से निवृत्त हो जा - ऐसा यहाँ उपदेश दिया है।

इस १०१वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं -

(मंदाक्रांता)

एको याति प्रबलदुरघाज्जन्म मृत्युं च जीव:
कर्मद्वन्द्वोद्भवफलमयं चारुसौख्यं च दु:खम्।
भूयो भुंक्ते स्वसुखविमुख: सन् सदा तीव्रमोहा-
देकं तत्त्वं किमपि गुरुत: प्राप्य तिष्ठत्यमुष्मिन्।।137।।

(वीर)

जीव अकेला कर्म घनेरे उनने इसको घेरा है।
तीव्र मोहवश इसने निज से अपना मुखड़ा फेरा है।।
जनम-मरण के दु:ख अनंते इसने अबतक प्राप्त किये।
गुरु प्रसाद से तत्त्व प्राप्त कर निज में किया वसेरा है।।137।।

श्लोकार्थ : जीव अकेला प्रबल दुष्कृत से जन्म और मृत्यु को प्राप्त करता है; जीव अकेला सदा तीव्र मोह के कारण स्वसुख से विमुख होता हुआ कर्मद्वन्द्वजनित फलमय (शुभ और अशुभ कर्म के फलरूप) सुन्दर सुख और दु:ख को बारम्बार भोगता है; जीव अकेला किसी भी प्रकार गुरु द्वारा एक तत्त्व को (चैतन्यतत्त्व को) प्राप्त करके उसमें स्थिर रहता है।

जीव अकेला ही पुण्य-पापरूपी दुष्कृत से संसार में जन्म-मरण को प्राप्त करता है। जिस भाव से स्वर्ग का भव करना पड़े, वह भी दुष्कृत है। ज्ञानानन्द चैतन्य को चूककर प्रबल दुष्कृत से जीव अकेला ही संसार भ्रमण करता है। स्वर्ग में जन्मे अथवा नरक में - वे दोनों ही दुष्कृत के

फल हैं। राग मात्र दुष्कृत है। चैतन्यस्वभाव की भावना के अलावा शेष सभी दुष्कृत हैं। बड़ा राजा होना भी दुष्कृत का फल है। चक्रवर्ती का पद भी दुष्कृत से ही मिलता है, वह पूर्वकृत विकार का ही फल है। आत्मा के ज्ञानानन्दस्वभाव से बाह्य संयोग नहीं मिलते। आत्मा का ज्ञानानन्दस्वभाव ही एक सुष्ठु पदार्थ हैं।

चैतन्य के सहज सुख को चूककर जीव अकेला ही पुण्य–पाप के फलरूप सुख–दुःख को भोगता है। चैतन्यसुख से विमुख होनेवाले को ही पुण्यफल मिष्ट लगता है। चैतन्य को चूककर स्वर्गसुख और नरकदुःख को पुनः पुनः जीव अकेला ही भोगता है। इन्द्रियों के सुख वास्तव में सुख नहीं हैं; किन्तु उनमें चैतन्य से विमुखता है, फिर भी अज्ञानी को वे सुख सुन्दर लगते हैं। वे चैतन्य के फल नहीं हैं, किन्तु पुण्य–पापरूप द्वन्द्व के फल हैं; इसलिये ज्ञानानन्द–मूर्त्ति आत्मा की श्रद्धा और ज्ञान कर।

जीव अकेला ही गुरूगम द्वारा अपनी पात्रता से जिस–तिस प्रकार एक चैतन्यतत्त्व को पाकर उसमें लीन होता है। जीव चाहे जैसे करके मोक्ष की जिज्ञासा करके पात्र होकर गुरूगम से आत्मतत्त्व को पाकर उसमें लीन होता है। तू अकेला ही रुचे, वैसे करके चैतन्यतत्त्व को प्राप्त कर। जगत से तुझे क्या काम है? गुरूगम से चैतन्यतत्त्व के पाने में तू अकेला है और उसमें स्थिर रहकर प्रत्याख्यान करने में भी अकेला है।

इसप्रकार १०१वीं गाथा का वर्णन पूर्ण हुआ।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app आज ही Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

अकार्यकारणत्वशक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की ४७ शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

समयसार की ७२वीं गाथा में आता है कि आस्रव, आकुलता को उत्पन्न करने वाले हैं, जिससे दुख के कारण हैं और भगवान आत्मा तो सदा ही निराकुल स्वभाववाला होने से किसी का कारण नहीं है, किसी का कार्य भी नहीं है। इसमें आचार्यदेव ने यह अकार्यकारणत्वशक्ति निकाली है। कोई ईश्वर जगत को बनाये, यह बात तो दूर रही, यहाँ तो कहते हैं कि आत्मा परद्रव्य को करे और परद्रव्य आत्म को करे – ऐसा परस्पर कार्य-कारणपना नहीं है। भाई! यह तो ऐसी बात है, जिससे जगत निहाल हो जावे। अज्ञानी भी पर का कुछ नहीं करता है। वह तो हठ से 'मैं' पर को करता हूँ' – ऐसा (मिथ्या) मानता है, वस्तु का अकार्यकारण स्वभाव तो जैसा है, वैसा है; उसमें किसी की मान्यता से बदलाव नहीं होता। जो इसको अन्तरंग में स्वीकार करता है, वह ज्ञानी है।

प्रश्न – तत्त्वार्थराजवार्तिक में तो दो कारणों से कार्य होने की बात कही है और आप मात्र उपादान से कार्योत्पत्ति बतला रहे हैं, यह विरोध क्यों है?

उत्तर – तत्त्वार्थराजवार्तिक में तो 'जब कार्य हुआ, तब निमित्त कौन था, उसका ज्ञान कराने के लिए दो कारणों से कार्योत्पत्ति की बात कहते हैं।' पर्याय किसी का कारण नहीं है और कार्य भी नहीं है – इस मूल बात को ध्यान में रखकर कि कार्यकाल में निमित्त कौन था, उसका प्रामाणिक ज्ञान कराने के लिए दो कारण से कार्य होता है – ऐसा कहा है। निश्चय से पर्याय स्वयं से प्रगट होती है, परद्रव्य उसका कारण-कार्य नहीं है, यह बात स्थापित करके पश्चात् निमित्त का ज्ञान कराता है; परन्तु जो निश्चय

को झूठा मानकर, उड़ाकर निमित्त का ज्ञान कराता है, वह तो सच्चा प्रमाणज्ञान ही नहीं है, वह तो मिथ्याज्ञान है।

प्रश्न – अकार्यकारणत्वशक्ति की व्याख्या में जो 'एक द्रव्यरूप' ऐसा शब्द है, वह कई लोगों को ऐसा लगता है कि यह तो मात्र द्रव्य की बात है; क्योंकि पर्याय तो नई-नई उत्पन्न होती है; अतः उसमें तो पर का कार्यकारणपना होता ही है।

उत्तर – उससे कहते हैं कि अरे भाई! तुम्हारी यह मान्यता सही नहीं है; क्योंकि द्रव्य की अकार्यकारणत्वशक्ति द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों में व्यापती है। जिसप्रकार द्रव्य अन्य के द्वारा नहीं किया जाता, गुण अन्य के द्वारा नहीं किये जाते, उसीप्रकार उसकी प्रत्येक पर्याय भी पर के द्वारा नहीं की जाती है। आहाहा...! द्रव्य-गुण-पर्यायस्वरूप प्रत्येक वस्तु को यहाँ परद्रव्य के लिए अकार्य-कारणमयी सिद्ध करते हैं। स्व के आश्रय से जो सम्यग्दर्शन की पर्याय प्रगट हुई, वह पर अर्थात् कर्म के उपशमादि से नहीं हुई है। उसीप्रकार वह पर्याय में कुछ नहीं करता है। अन्य का कार्य अन्य के द्वारा किया जाय – यह जैन सिद्धान्त नहीं है। अहा! जब केवलज्ञान हुआ तो मोक्षमार्ग कारण और केवलज्ञान उसका कार्य – ऐसा नहीं हैं; क्योंकि केवलज्ञान की पर्याय में अकार्यकारणत्वशक्ति व्यापती है। यहाँ कहते हैं कि जब पूर्व पर्याय वर्तमान केवलदशा के लिए नहीं है। जब ऐसा है तो मनुष्यपना और उत्तमसंहनन था; अतः केवलज्ञान प्रगट हुआ यह बात ही कहाँ रही? यह तो समस्त निमित्त का कथन है बापू! आजकल ऐसी सूक्ष्म बात लोगों को कठिन लगती है; परन्तु यह न्याय से, तर्क से सिद्ध बात है।

अहा! आत्मा की प्रत्येक शक्ति में इस अकार्यकारणस्वभाव का रूप है। चारित्र की निर्मल पर्याय जब उत्पन्न होती है, तब द्रव्य के आश्रय से ही वह उत्पन्न होती है। अत: स्वयं के द्रव्य के आश्रय से चारित्रदशा प्रगट हुई – ऐसा कहना भी व्यवहार है; क्योंकि वास्तव में तो चारित्र की पर्याय का कारण वह पर्याय स्वयं है। वह पर्याय स्वयं से ही षट्कारकरूप परिणमित होकर उस रूप हुई है। जब ऐसी बात है, तब व्यवहाररत्नत्रय का राग कारण और चारित्र की निर्मल पर्याय कार्य यह बात ही कहाँ रही? यह बात है ही

नहीं। समय-समय की जो निर्मलपर्याय प्रगट होती है, वह शक्ति के कारण से प्रगट होती है - ऐसा कहना भी व्यवहार है। आहाहा... एक समय में जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निर्मल निराकुल आनन्द की अनुभूति की दशा प्रगट हुई, उस पर्याय की सामर्थ्य का क्या कहना? आहाहा... वह पर्याय निज सामर्थ्य से ही स्वतंत्र प्रगट हुई है, वह अन्य का कार्य नहीं है, अन्य का कारण भी नहीं है। अनुभव की निर्मलदशा होने के पहले शुभभाव हुआ; इसलिए अनुभूति की दशा प्रगट हुई है, ऐसा नहीं है।

ज्ञान में, दर्शन में, आनन्द में, चारित्र में, वीर्य में - इसप्रकार प्रत्येक गुण में अकार्यकारणत्व स्वभाव है। गुण की प्रगटता में पर का कारणकार्यपना किंचित् मात्र भी नहीं है। जब अन्त:पुरुषार्थ जाग्रत होवे, तब परद्रव्य (देव-शास्त्र-गुरु, कर्मादि) का किंचित् कारणपना नहीं है। 'भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो' भूतार्थ के आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रगट होता है, ऐसा कहा है न? परन्तु यह व्यवहार है। सम्यग्दर्शन प्रगट होने में जिसप्रकार परद्रव्य कारण नहीं है; उसीप्रकार स्वयं का द्रव्य-गुण भी वास्तव में कारण नहीं है। ऐसा पर्याय का अकार्यकारणस्वभाव है।

आहाहा...! यह अकार्यकारणस्वभाव जिसको समझ में आ जाता है, उसकी क्या बात करें। उसकी तो बुद्धि और गति बदल जाती है। 'मैं पर का क्या करूँ? कुछ भी नहीं करूँ' - ऐसा जानता हुआ वह पर से अर्थात् पर के कर्तापने से हट जाता है और स्व सम्यग्दर्शनादि कार्य के लिए पर की कोई अपेक्षा नहीं है, ऐसी निर्मल प्रतीति होती है। देखो, कैसा स्वाधीनता का मार्ग है और कैसा यह स्वाधीन धर्म है। सभी अज्ञानीजीव अनादिकाल से पर में स्वयं का कार्य-कारणपना मानकर स्वकार्य के लिए, पर के आश्रित होकर पर में ही प्रवर्तन करते हैं, रमते हैं; परन्तु यह तो संसार में रखड़ने का, दुख का पंथ है बापू! अत: पर के बिना मेरा काम नहीं चलता है तथा पर का काम 'मैं कर दूँगा' ये बात ही छोड़ दो। भाई! यह भ्रम छोड़कर पर से हटकर स्व में सावधान होओ और पर का काम कभी भी तू करे, ऐसा तेरा स्वरूप ही नहीं है। अहो! आत्मा का अकार्यकारण स्वभाव कहकर आचार्यदेव ने पर से भेदज्ञान कराकर स्वाधीन मार्ग बताया है। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे ...)

प्रश्न : समयसार में शुद्धनय का अवलम्बन लेने के लिये कहा है, परन्तु शुद्धनय तो ज्ञान का अंश है, पर्याय है, क्या उस अंश के – पर्याय के अवलम्बन से सम्यग्दर्शन होगा?

उत्तर : शुद्धनय का अवलम्बन वास्तव में कब हुआ कहा जाय? अकेले अंश का भेद करके उसके ही अवलम्बन में जो अटका है, उसके तो शुद्धनय है ही नहीं। ज्ञान के अंश को अन्तर में लगाकर जिसने त्रिकाली द्रव्य के साथ अभेदता की है, उसको ही शुद्धनय होता है। ऐसी अभेद दृष्टि की, तब शुद्धनय का अवलम्बन लिया – ऐसा कहा जाता है। 'शुद्धनय का अवलम्बन' – ऐसा कहने पर उसमें भी द्रव्य-पर्याय की अभेदता की ही बात आती है; परिणति अन्तर्मुख होकर द्रव्य में अभेद होने पर जो अनुभव हुआ – उसका नाम शुद्धनय का अवलम्बन है; उसमें द्रव्य-पर्याय के भेद का अवलम्बन नहीं है। यद्यपि शुद्धनय ज्ञान का ही अंश है; पर्याय है; परन्तु वह शुद्धनय अन्तर के भूतार्थ स्वभाव में अभेद हो गया है अर्थात् वहाँ नय और नय का विषय जुदा नहीं रहा। जब ज्ञानपर्याय अन्तर में झुककर शुद्धद्रव्य के साथ अभेद हुई, तब ही शुद्धनय निर्विकल्प है। ऐसा शुद्धनय कतकफल के स्थान पर है। जैसे – मैले पानी में कतकफल अर्थात् निर्मली नामक औषधि डालने पर पानी निर्मल हो जाता है, वैसे ही कर्म से भिन्न शुद्धात्मा का अनुभव शुद्धनय से होता है। शुद्धनय से भूतार्थ स्वभाव का अनुभव होने पर आत्मा और कर्म का भेदज्ञान हो जाता है।

समाचार दर्शन -

पण्डित टोडरमल भवन की वसुंधरा पर अध्यात्म मेला....

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ४५वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक ३१ जुलाई से ७ अगस्त २०२२ तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर के प्रारम्भ में ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी, घेवरचन्दजी जैन ओसवाल परिवार, जयपुर ने किया। यह समारोह तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के मंगल सान्निध्य एवं श्री प्रेमचन्दजी बजाज, कोटा की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें मुख्य अथिति श्री रविजी जैन (आयुक्त जयपुर विकास प्राधिकरण) थे।

शिविर उद्घाटन श्री तन्मयजी-ध्याताजी एवं समस्त बजाज परिवार कोटा, मंच उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर एवं मण्डप उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने किया। भवन में स्थित पण्डित प्रवर टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री बज्रसेनजी जैन दिल्ली ने एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री टी.सी.जैन, अभिषेकजी-समीक्षाजी जैन ने किया। पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने सभा का संचालन किया एवं ट्रस्ट में संचालित गतिविधियों का परिचय दिया। मंगलाचरण पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारालिखित **श्री नियमसार महामण्डल विधान** का आयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ।

शिविर व विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती कुसुमजी-महेन्द्रजी गंगवाल सुपुत्र राहुलजी विनीतजी गंगवाल परिवार, जयपुर के अतिरिक्त शिविर आमंत्रणकर्ता श्री प्रेमचन्दजी सुपुत्र तन्मयजी, ध्याताजी बजाज परिवार कोटा, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रदीपजी सुपुत्र तिलकजी अरिहन्तजी चौधरी परिवार किशनगढ़, श्रीमती रेखा संजयजी सुपुत्र तीर्थेशजी सुपुत्री मोक्षा दीवान सूरत, श्रीमती शशिजी-सुरेशजी जैन शिवपुरी व श्रीमती श्रीजी-अश्वनीजी एवं सुपुत्री अनिका जैन दिल्ली तथा विधान आमंत्रणकर्ता पण्डित शिखरचन्दजी संजयजी जैन विदिशा, श्रीमती कविताजी-प्रकाशचन्दजी छाबड़ा सूरत, श्री हेमचन्दजी एवं सुपुत्र वरुणकुमारजी जैन रेवाडी व श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर रहे।

शिविर में संचालित प्रवचन एवं कक्षाओं में प्रातःकाल डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचनसार विषय पर प्रवचन प्रसारण एवं आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के इष्टोपदेश विषय पर सी.डी. प्रवचन के उपरांत डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के तत्त्व-चिन्तन विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला एवं चार कक्षायें संचालित हुई। दोपहर में बाबू युगलकिशोरजी एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के वीडियो प्रवचन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा द्वारा कथा-वाचन के उपरान्त दो प्रवचन एवं चार कक्षायें आयोजित हुई। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दो प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही प्रात: व सांयकाल सामूहिक कक्षाएँ भी लगीं।

विद्वत् समागम : डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, विदुषि शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई, पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड, पण्डित दीपकजी शास्त्री वैद्य, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा व डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री बाँसवाडा एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर।

०७ अगस्त २०२२ को प्रातःकाल **समापन समारोह** में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने शिविर में पधारकर अपना बहुमूल्य समय देने वाले विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

‘भरत के अन्तर्द्वन्द्व’ का तृतीय मंचन

६ अगस्त २०२२ को दोपहर में टोडरमल स्मारक भवन स्थित डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल प्रवचन मण्डप में ‘भरत के अन्तर्द्वन्द्व’ नामक नाटक उसके लेखक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर की साक्षात् उपस्थिति में रंगमंच पर मंचित किया गया।

नाटक के मंचन के पूर्व संचालक पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल ने बताया कि इस नाटक में डॉ. भारिल्ल ने भरत और बाहुबली के अपार प्रेम को दर्शाया है और समाज के समक्ष भरत के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि इस भरत के व्यक्तित्व को मैंने गढ़ा है। दुनिया इसे भविष्य में **‘हुकमचन्द के भरत’** के नाम से याद रखेगी। सभी ने नाटक के सन्देश को समझते हुए उसके प्रति प्रसन्नता व्यक्त की।

ढाईद्वीप जिनायतन में पंचकल्याणक के पूर्व...

ढाईद्वीप रथ प्रवर्तन एवं पात्र सम्मान समारोह

इन्दौर : श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर के तत्त्वावधान में ढाईद्वीप जिनायतन में आयोजित होने वाले श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार-प्रसार के लिए ढाईद्वीप की रचना सादृश्य अलौकिक सौंदर्य युक्त रथ तैयार किया गया, जो पंचकल्याणक से पूर्व सम्पूर्ण भारत वर्ष में भ्रमण करते हुए, विशाल जनसमुदाय को पंचकल्याणक में आमंत्रित करेगा।

दिनांक १४-१५ अगस्त २०२२ को रथ प्रवर्तन, पात्र सम्मान समारोह एवं ढाईद्वीप मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। ध्वजारोहण श्री अनिलजी जैन जैनको परिवार इन्दौर ने एवं रथ का अनावरण श्री अशोककुमारजी-सुशीलकुमारजी बजाज परिवार कोलकाता व श्री मुकेशजी जैन 'जैना ज्वैलर्स' परिवार ग्वालियर ने किया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर (Online), श्री महीपाल ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री अशोकजी सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, श्री अजितजी वीशुभाई जैन सूरत, श्री नरेन्द्रजी वड़जात्या जयपुर, श्री विजयभाई दादर, श्री नितिनभाई वोरीवली, श्री श्रेयांशजी कोलकाता, श्री चिन्मयभाई बड़कूल, श्री उल्लासभाई जोबालिया, श्री अशोकभाई मुम्बई, श्री कमलजी पडालिया, श्री आनन्दजी पाटनी आदि अतिथियों का सान्निध्य मिला।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के पंचकल्याणक से संबंधित उद्बोधन एवं प्रवचनों का लाभ मिला। प्रथम दिन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना की अध्यक्षता में **पंचकल्याणक क्या, क्यों और कैसे?** एवं द्वितीय दिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की अध्यक्षता में **ढाईद्वीप : एक परिशीलन** विषय पर मार्मिक संगोष्ठियाँ हुईं।

इस प्रसंग पर पंचकल्याणक के सभी पात्रों का भव्य सम्मान किया गया एवं छः माह पूर्व आयोजित होने वाली इंद्र सभा भी आयोजित की गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। **ज्ञातव्य है कि** २० से २६ जनवरी २०२२ तक आयोजित यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विश्व का अद्वितीय आदर्श पंचकल्याणक होगा।

1977 में संस्थापित टोडरमल महाविद्यालय का...

46वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : महाविद्यालयों में शिरोधार्य श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय अपने गौरवमयी इतिहास के साथ ४६वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसी उपलक्ष्य में दिनांक २४ जुलाई २०२२ को महाविद्यालय के **46वें स्थापना दिवस** के अवसर पर एक विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समारोह महाविद्यालय के स्वप्नदृष्टा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इसके अतिरिक्त श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन संदेश जैन दिल्ली तथा मंगलाचरण चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने किया।

साथ ही महाविद्यालय के महत्त्व को बतलाते हुए सर्वज्ञ जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने वक्तव्य एवं अरविंद जैन खड़ैरी, अंकित जैन कुटौरा व निवेश जैन दिल्ली ने कविता प्रस्तुत की। रात्रि में ८:३० बजे महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा '**टोडरमल महाविद्यालय : एक अनोखी स्थापना**' नामक नाटक प्रस्तुत किया गया।

जिन देशना यूथ कन्वेंशन सानन्द सम्पन्न

ज्ञानोदय-भोपाल : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान परमार्थिक ट्रस्ट के तत्वावधान में १९ से २१ अगस्त २०२२ तक **जिन देशना यूथ कन्वेंशन** नामक कार्यक्रम श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर ट्रस्ट ज्ञानोदय दीवानगंज में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर युवाविद्वान अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर पं. विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ़ का समागम प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण श्री तीर्थेशजी संजयजी दीवान सूरत व श्री प्रखर-श्रेया चौधरी भोपाल ने किया। कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री साकेतजी कमलजी बड़जात्या दादर के अतिरिक्त श्री अरिहंतजी तिलकजी चौधरी किशनगढ़ व श्री ध्याताजी बजाज कोटा थे।

कार्यक्रम २० से ४५ वर्ष के युवाओं की मुख्यता से आयोजित हुआ, जिसमें गुरुदेवश्री के सी.डी प्रवचन एवं विद्वानों ने जिनागम के महत्वपूर्ण विषयों पर कक्षायें लीं। संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुआ।

डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का अभिनन्दन समारोह

चैतन्यधाम-अहमदाबाद : यहाँ १९ से २१ अगस्त २०२२ तक अखिल भारतीय जैन युवा फैड़रेशन गुजरात के तत्त्वावधान में आयोजित आध्यात्मिक ज्ञान वैराग्य शिक्षण शिविर के अवसर पर २१ अगस्त २०२२ को वीतरागी जिनधर्म प्रभावक, सरल स्वभावी, आत्मख्याति विशेषज्ञ डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर को वीतरागी जिनशासन की परम्परा के पुनीत प्रवाह में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर रहकर जैनदर्शन के विद्वान तैयार करने हेतु वृहद स्तर पर ट्रस्ट के सभी ट्रस्टियों, विशिष्ट अतिथियों, सहस्रादिक साधर्मियों व शास्त्री स्नातकों की उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

यह सम्मान श्री कुन्दकुन्द कहान श्री बाबूभाई महेता चैरिटेबल ट्रस्ट चैतन्यधाम एवं श्री वेतालीस दशा हुम्मड दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस प्रसंग पर चैतन्यधाम (अहमदाबाद) में संचालित विद्यालय के १० वर्षीय सफल संचालन के उपलक्ष्य में विद्यालय ने अपने समस्त भूतपूर्व विद्यार्थी को आमंत्रित कर सम्मानित किया।

विशिष्ट विद्वानों में पण्डित शैलेशभाई तलोद, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ का समागम प्राप्त हुआ। चैतन्यधाम के प्रमुख श्री अमृतलालजी चुन्नीलालजी महेता, उपप्रमुख श्री अनिलभाई ताराचंदजी गांधी, मंत्री श्री राजुभाई वाडीलालजी शाह, प्रतीकभाई चंद्रकांतजी शाह द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचीनजी शास्त्री ने किया।

वैराग्य समाचार

किदवईनगर कानपुर निवासी **श्रीमती पुष्पाजी जैन धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री राजकुमारजी जैन** का अत्यन्त सरल परिणामों पूर्वक ५ अगस्त, २०२२ को देहावसान हो गया। आप एक स्वाध्यायी विदुषी महिला थीं। गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों को नियमित रूप से सुना करती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक और वीतराग-विज्ञान हेतु २१००-२१०० रूपये की राशि प्राप्त हुई है; एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन?

सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर समाज के तत्त्वजिज्ञासु जीवों द्वारा प्राप्त आमंत्रणों के आधार पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं।

विशेष विद्वान – (1) डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर : कोलकाता, **(2) बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन :** सोनागिर, **(3) बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना :** सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखरजी, **(4) पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन :** उज्जैन, **(5) बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद :** दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट), **(6) ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना :** बैंगलोर, **(7) पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** हिम्मतनगर, **(8) पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली :** अशोक नगर, **(9) पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत :** दिल्ली (विश्वास नगर), **(10) डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर :** नागपुर, **(11) डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर :** औरंगाबाद, **(12) पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** मोरवी, **(13) पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** राजकोट, **(14) पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** विभिन्न स्थान, **(15) पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड :** वस्त्रापुर (अहमदाबाद), **(16) डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर :** भोपाल (चौक)।

विदेश – (1) पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद : लन्दन, **(2) पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा :** शिकागो, **(3) पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री जयपुर :** अमेरिका (मोना), **(4) पण्डित नीलेशभाई मुम्बई :** नौरोबी, **(5) पण्डित नितेशजी शास्त्री बासवाँड़ा :** दुबई।

मध्यप्रदेश प्रान्त – (1) जबलपुर : पण्डित अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद, **(2) इन्दौर (साधना नगर) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, **(3) भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोला, **(4) बीना :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, **(5) रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, **(6) विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री सोलापुर, **(7) इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित अनुभवजी कानपुर, **(8) उज्जैन (क्षीरसागर) :** पण्डित संजयजी शास्त्री गनोडा, **(9) गुना (वीतराग-विज्ञान) :** ब्र. धरणेन्द्रजी दिल्ली, **(10) भिण्ड (परमागम मन्दिर) :** डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री सिंघई जयपुर, **(11) टीकमगढ़ :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **(12) ग्वालियर (फालका बाजार) :** पण्डित आकेशजी उभेगाँव, **(13) सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **(14) इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **(15) खुरई :** पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, **(16) द्रोणगिरी :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री, **(17) होशंगाबाद (तारण समाज) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी कुंडा, **(18) भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित विनोदजी जैन गबेरा, **(19) गुना (महावीर जिनालय) :** ब्र. मनोजजी जबलपुर, **(20) राधौगढ़ :** पण्डित अमनजी

शास्त्री आरोन, (21) **इंदौर (गांधीनगर) :** पण्डित विकासजी छाबड़ा इंदौर, (22) **बडनगर :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मोरवी, (23) **मौ :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर, (24) **छिन्दवाड़ा (गोलगंज) :** पण्डित अनुभवजी मंगलार्थी करेली, (25) **छिन्दवाड़ा (गांधी नगर) :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेर इंदौर, (26) **सागर (तारण तरण) :** पण्डित अभिषेकजी मंगलार्थी उभेगाँव, (27) **शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, (28) **मन्दसौर (नई आबादी) :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, (29) **आरोन :** पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना, (30) **सिवनी :** पण्डित अंकितजी शास्त्री भगवाँ, (31) **इटारसी (तारण–तरण) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री भोपाल, (32) **कटनी :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुंबई, (33–34) **भोपाल (ज्ञानोदय) :** पण्डित अमनजी शास्त्री, विदुषी श्रुतिजी शास्त्री दिल्ली, (35–36) **मुरार (ग्वालियर) :** पण्डित रजितजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह, (37) **विदिशा (अरिहंत विहार) :** ब्र. सुधाबहनजी उभेगांव, (38) **इंदौर (कालानी नगर) :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल, (39) **गंजबासौदा (तारण तरण) :** ब्र. मुक्तानंदजी, (40) **बरेली :** पण्डित ज्ञाताजी सिंघई सिवनी, (41) **पंधाना :** पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री बीकानेर, (42) **ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर, (43) **जावरा :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा, (44–45) **सागर (मकरोनिया) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, विदुषी स्वस्ति सेठी जयपुर, (46–47) **सोनागिर :** डॉ. विनोदजी चिन्मय विदिशा, डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा, (48) **खनियांधाना :** पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, (49–50) **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित विनोदजी जैन जबेरा, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, (51) **सिलवानी :** पण्डित संयमजी शास्त्री खनियांधाना, (52) **गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित सजलजी शास्त्री आरोन, (53–55) **सोनागिर :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. विनोदजी चिन्मय विदिशा, डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा, (56) **जावरा :** पण्डित आप्तजी शास्त्री दमोह, (57) **शहडोल :** पण्डित दुर्लभजी शास्त्री गुढ़ाचन्दजी, (58) **शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री शिवपुरी, (59) **शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, (60) **गौरझामर :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री फुटेरा, (61) **खैरागढ़ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री भोपाल, (62) **अमायन :** पण्डित रमेशचन्दजी लवाण, (63) **कोलारस :** पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ़, (64–67) **निसईजी :** डॉ. सरसजी विदिशा, डॉ. रतनलालजी होशानाबाद, पण्डित सुधीरजी जैन, विदुषी पुष्पाजी होशानाबाद, (68) **करेली :** पण्डित ज्ञाताजी सिंघई सिवनी, (69) **अम्बाह :** पण्डित पदमचन्द्रजी कोटा, (70) **सनावद :** पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री हेरले, (71) **केसली :** पण्डित सत्येन्द्रजी शास्त्री मौ, (72) **इन्दौर (ग्रेटर ब्रजेश्वरी) :** पण्डित लालारामजी आशोकनगर, (73–74) **विदिशा (अरिहंत विहार) :** ब्र. सुधाबहनजी उभेगाँव, विदुषि समयसत्यप्रधानजी शास्त्री, (75) **अभाना :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सागर, (76) **डबरा :** पण्डित अक्षतजी शास्त्री निम्बाहेडा।

महाराष्ट्र प्रान्त – (1) मुम्बई (दादर) : पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **(2) मुम्बई (बोरीवली) :** डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **(3) मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :**पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, **(4–5) मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित विवेकजी टाया, पण्डित अनिलजी शास्त्री हथाया, **(6) मुम्बई (भायंदर) :** पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, झालरापाटन, **(7) मुम्बई (मलाड) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **(8) मुम्बई (दहीसर) :** पण्डित अविनाशजी वात्सल्य छिन्दवाडा, **(9) मुम्बई (वसई रोड) :** पण्डित कमलेशजी शास्त्री ग्वालियर, **(10) मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, **(11–15) गजपंथा :** विदुषी धवलश्री पाटील बेलगांव, पण्डित सचिनजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगाँव, पण्डित उज्जवलजी शास्त्री डसाला, पण्डित सुमेरचन्दजी बेलोकर मुम्बई,**(16) वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, **(17–20) कारंजा (लाड) :** पण्डित अनिलजी इंजी. इन्दौर, पण्डित चिन्तामणजी शास्त्री भूस, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित जयजी शास्त्री मुलावकर, **(21) देवलाली :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, **(22–24) देवलाली (विधान हेतु) :** पण्डित दीपकजी धवल भोपाल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, **(25) चिखली :** पण्डित प्रिन्सजी शास्त्री, **(26) सेलू :** पण्डित मनोजजी जबलपुर, **(27) अकोला :** ब्र. अमितभैया विदिशा, **(28) मलकापुर :** पण्डित शुभमजी ज्ञानोदय,**(29–30) बाहुबली (कुंभोज) :** पण्डित विजयसैनजी पाटील, पण्डित नेमीनाथजी शास्त्री, **(31) पुणे (युवा संघ) :** पण्डित विवेकजी छिन्दवाडा, **(32) नातेपुते :** पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, **(33) दुधगाँव :**पण्डित दीपकजी शास्त्री अथणे, **(34) देवलगांवराजा :**पण्डित प्रमोदजी मोदी सागर, **(35) पंदरपुर :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, **(36) डासाला :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **(37) डासाला :**पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **(38) गजपंथा (विधान हेतु) :** पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, **(39–41) सोलापुर :** पण्डित प्रशांतजी मोटरे, पण्डित विजयजी कालेगोरे, पण्डित रवीन्द्रजी काले शास्त्री, **(42–43) हिंगोली :** पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित अमोलजी शास्त्री सिंघई, **(44) सोलापुर (आदिनाथ मंदिर) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, **(45–47) सांगली :** पण्डित महावीरजी पाटील दानोजी, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोल्हापुर, पण्डित नितिनजी शास्त्री कोठेकर सांगली, **(48) फालेगाँव :**पण्डित सौरभजी शास्त्री कालेगोरे, **(49) विहीगाँव :** पण्डित सम्मेदजी पाटील, **(50) सोलापुर (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इंदौर, **(51–52) सोलापुर (बुवणे मंदिर) :** पण्डित विजयजी कालेगोरे, पण्डित रवीन्द्रजी काले, **(53–62) नागपुर (इतवारी) :** पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री, विदुषी प्रतीतिजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, पण्डित श्रीसंतजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित मोहितजी शास्त्री, पण्डित अतिशयजी शास्त्री, **(63–65) औरंगाबाद :** पण्डित विवेकजी शास्त्री महाजन,

पण्डित गुलाबचन्दजी शास्त्री बोरालकर, पण्डित संजयजी शास्त्री राऊत।

राजस्थान प्रान्त – (1) कोटा (इन्द्र बिहार) पण्डित शशांकजी शास्त्री अमायन, **(2) कोटा (रामपुरा) :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, **(3) पिडावा :** पण्डित सुनीलजी देवरी, **(4) उदयपुर (सेक्टर-११) :** पण्डित निखिलजी शास्त्री भायंदर, **(5) उदयपुर (नेमीनगर) :** पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री, **(6) उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, **(7) जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, **(8) भीलवाड़ा (शास्त्रीनगर) :** पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री मंगलायतन, **(9) बिजौलिया :** पण्डित सुरेन्द्रजी इन्दौर, **(10) देवली (चन्द्रप्रभ जिनालय – अग्रवाल समाज) :** पण्डित नेमचन्दजी शास्त्री खतोली, **(11) अजमेर (वैशाली नगर) :** पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, **(12) अलवर (मुमुक्षु मण्डल) :**पण्डित महावीरप्रसादजी उदयपुर, **(13) अजमेर (वीतराग-विज्ञान भवन) :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **(14) भीलवाडा (अजमेरों की गोठ) :**पण्डित सौरभजी शास्त्री मडदेवरा, **(15) विजय नगर :**पण्डित अखिलजी शास्त्री जयपुर, **(16) अलीगढ़ :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री कोटा, **(17) जयपुर (सेठी चैत्यालय) :** पण्डित समकितजी शास्त्री जयपुर।

उत्तरप्रदेश प्रान्त – (1) अलीगढ़ (मंगलायतन) : ब्र. कल्पनाबेनजी जयपुर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, **(2) मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, **(3) कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित महेशचन्दजी ग्वालियर, **(4) सहारनपुर :**पण्डित जयकुमारजी कोटा, **(5) रुड़की :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, **(6-7) महरौनी :** पण्डित नागेशजी पिडावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ़, **(8) ललितपुर (सीमन्धर जिनालय) :** विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर, ललितपुर **(9-10) (शीतलनाथ जिनालय) :** डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, पण्डित आराध्यजी टडैया मुम्बई, **(11) खतौली :** पण्डित संजयजी शास्त्री खानियांधाना, **(12) आगरा (टांसयमुना) :** पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, **(13) आगरा (अछनेरा) :** पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, **(14) करहल :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी अमायन, **(15) सहारनपुर :** पण्डित संयमजी शास्त्री देशमाने, **(16) महरौनी :** पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर।

गुजरात प्रान्त – (1) अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, **(2) अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **(3) अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, **(4) अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित देवेन्द्रजी हिम्मतनगर, **(5) दाहोद :** पण्डित सुदीपकुमारजी उदयपुर, **(6) बड़ोदा :**पण्डित दीपकजी कोटडिया अहमदाबाद, **(7) वापी :** पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना, **(8-10) अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** ब्र. सुनीलभैया शिवपुरी, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी, पण्डित मनीषजी सिद्धान्त खड़ैरी, **(11) सूरत :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड **(12-13) अहमदाबाद (नरोडा) :**पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रथमजी शास्त्री भिण्ड, **(14) अहमदाबाद (बहीमपुरा) :**पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, **(15)**

अहमदाबाद (ओढव) : डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर **(16) मोरवी :** पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन, **(17) सुरेन्द्र नगर :** पण्डित अनुभवजी मंगलार्थी जबलपुर, **(18) रखियाल :** पण्डित दिलीपजी वाकलीवाल **(19) रोहतक (मॉडल टाउन) :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा।

अन्य प्रान्त – (1–6) पोन्नूर : पण्डित विमलदादा झांझरी, ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, ब्र. पुष्पलताबेन, ब्र. समताबेन, ब्र. ज्ञानधाराबेन, **(7–8) बेलगांव :** पण्डित कैलाशचन्दजी अचल, पण्डित आकाशजी शास्त्री मौ, **(9–10) कोलकाता :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित अमितजी शास्त्री कोलकाता, **(11–12) सन्मति नगर :** पण्डित प्रथमजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी देवरान। **(13–16) दिल्ली (अध्यात्म तीर्थ) :** बाल ब्र. नन्हेभैया सागर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, ब्र. प्रतीतिबहन, ब्र. श्रद्धाबहन, **(17) दिल्ली (फरीदाबाद से १०) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी, **(18) दिल्ली (मंटोला पहाडगंज) :** पण्डित सम्यकजी शास्त्री अमरमऊ, **(19) दिल्ली (जनकपुरी बी–१) :** पण्डित अनिकेतजी शास्त्री भिण्ड, **(20) दिल्ली (उत्तमनगर) :** पण्डित सम्यकजी अमरमऊ, **(21) दिल्ली (बिलौनी) :** पण्डित अश्विनजी नानावटी, **(22) दिल्ली (पीरागढ़ी) :** पण्डित ध्रुवजी शास्त्री ज्ञानोदय, **(23) दिल्ली (राजेन्द्र नगर) :** पण्डित शुभमजी गढ़ाकोटा, **(24) दिल्ली (रोहिणी से. १३) :** पण्डित नितिनजी मड़देवरा, **(25) दिल्ली (नांगलोई) :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा, **(26) दिल्ली (दिल्ली केन्ट) :** पण्डित ध्रुवजी शास्त्री शिवपुरी, **(27) दिल्ली (प्रहलाद नगर) :** पण्डित संयमजी शास्त्री शाह, **(28) दिल्ली (पाण्डव नगर) :** पण्डित अरिहन्तजी शास्त्री भिण्ड।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा विरचित

वैराग्य महाकाव्य विषय पर पीएच.डी.

मुम्बई निवासी श्रीमती गुणवंती बेन शाह ने अपने पी.एच.डी. शोध विषय के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा विरचित वैराग्य नामक महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय समालोचनात्मक अध्ययन विषय को चुना है। वे मुम्बई स्थित सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय में धर्म अध्ययन संस्थान के अन्तर्गत जैन अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी के निर्देशन में शोध कार्य करेंगी।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के जीवन और सत्साहित्य पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से तीन पीएच.डी. (शोध कार्य) की जा चुकीं हैं।

पंचकल्याणक के पात्रों का भव्य सम्मान
सौधर्म इन्द्र
कमलजी-उषाजी पाडलिया, इन्दौर
कुबेर
मुकेशजी-बबीताजी, ग्वालियर
माता-पिता
आनन्दजी-चन्द्रकान्ताजी पाटनी, इन्दौर
इन्द्र-इन्द्राणी
सिद्धेशजी-अनुप्रेक्षाजी, मुम्बई
इन्द्र-इन्द्राणी
श्रेयांशजी-शिखाजी, सूरत
इन्द्र-इन्द्राणी
शुद्धात्मजी-नयनाजी भण्डारी, दुबई
इन्द्र
श्रेयांशजी, कोलकाता
इन्द्र-इन्द्राणी
नरेंद्रजी-कल्पनाजी बड़जात्या, जयपुर
इन्द्र-इन्द्राणी
महेन्द्रजी-राजेशजी चौधरी, भोपाल
राजा-रानी
नवीनजी-कविताजी पाटनी, इन्दौर
विधान आमंत्रणकर्ता
विजयभाई-भारतीबेन दादर, मुम्बई
मुख्य शिखर पर कलश विराजमानकर्ता
अमीतजी (वीशू) सूरत
महोत्सव ध्वजारोहणकर्ता
सोनलजी-मुकेशजी जैन, ढाईद्वीप
समारोह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

अलौकिक सौन्दर्य युक्त ढाईद्वीप रथ

रथ का अनावरण

ध्वजारोहण समारोह

समारोह में मंचासीन महानुभाव

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 अगस्त 2022

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**